

दीपावली क्या करें क्या न करें /

दीपावली के अवसर पर विचारणीय बिंदु

गोवर्द्धन पूजन – वात्सल्य रत्नाकर पृ-४५२

गो = जिनवाणी वर्द्धन = प्रगटना | गोतम स्वामी की वाणी प्रगटी | सप्त पूता अर्थात् सप्त भंग | दीवाली के बाद हिन्दू गोवर एवं सप्तपूता की पूजा करते हैं | वह जैनों की देखादेखी प्रतीकात्मक पूजन है | हम तो जिनवाणी एवं उसके सप्त भंग की पूजन करते हैं |

विचार कीजिए

वीर प्रभु का निर्वाणोत्सव पर्व है न कि दीपावली या दिवाली |

न करें

रात्री ४ बजे से जल भरना पूजा सामग्री धोना पूजा करना यह सब रात्रि पूजन का दोष है | दिन निकलने पर ही सारे आरम्भ पूजन उत्सव होना चाहिए | हाँ जागर निर्वाण भक्ति, महावीराष्टक आदि पढ़ने चाहिए | भगवान का निर्वाण जाने का पावापुरी का दृश्य का ध्यान करके रूपस्थ ध्यान सफल करना चाहिए |

मिठिया बूंदी के लड्डू नहीं चढ़ाना चाहिए | पहले स्वाध्याय के अभाव में इनके चढ़ाने की परम्परा थी | बाद में मात्र शकर के लड्डू चलन में आये | परन्तु लड्डू गिरने से पूरे मंदिर में चींटियाँ हो जाती है जिससे उस दिन बहुत हिंसा होती है |

नारियल का छिला गोला चढ़ाना सही है |

प्रातः काल या अन्य समय में भी फटाके नहीं फोड़ना चाहिए |

साय/ रात्री काल में किसी की भी द्रव्य से पूजन गृहीत मिथ्यात्व है | वही खाते, मिठाइयाँ, चांदी के सिक्के या मिट्टी की पुतली पूजना या किसी भी विधि से पूजा करना |

मात्र भक्ति की जा सकती है | आज तो महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक है अतः आज के दिन तो मन्दिर भरे होने चाहिए | अच्छा हो कि हम ५-७ दिन का कोई सुंदर तात्विक आयोजन जैसे विधान, प्रवचन, महावीर कथा वाचन करा लें |

सार्वजनिक सभा का आयोजन किया जा सकता है | कथा आधारित प्रतियोगिता, प्रश्न मंच चला सकते हैं | भजन बनाओ, पेंटिंग स्पर्धा आदि कई कार्य आयोजित किये जा सकते हैं | स्कूल बाजार समाज में फटाके न चलावें ऐसा अभियान चलावें | मन्दिर में दिया नहीं लगाना | हाँ मन्दिर की साज सज्जा अवश्य की जावें | विद्युत् माला लगाई जा सकती है | हिंसा न हो इसका ध्यान रखें |

बाजार की मिठाइयाँ खरीदी खाई या भेंट में न दी जावें |

आज त्याग संयम से रहना चाहिए |

अहिंसा त्याग वैराग्य का पर्व है | मन्दिर में सफाई पुताई के नाम पर अजैनों (मांसाहारी, अस्पृशी शुद्र आदि) का प्रवेश न हो, समाज स्वयं अपने हाथों से यह काम कर सकती है | सारे युवक युवतीयां महिला पुरुष एक दिन में मन्दिर की सारी सफाई कर सकते हैं |

जिन प्रतिमाओं का मंजन करना चाहिए | साथ ही सिंहासन, क्षत्र, चंवर भी संवारने चाहिए | नये वरतन से पूजा करें |

दोचा लगे हुए पुराने वर्तन काम में नहीं लेकर हटा देना चाहिए | नये वस्त्र पूजन में शामिल करें | ध्वजा नयी लगा दें |

पुरानी ध्वजा जलाकर विसर्जित कर देनी चाहिए | यहाँ वहाँ लापरवाही से फेकना नहीं चाहिए | हाथों से सिलकर कपड़े की या कागज की झंडियों से मन्दिर सजना चाहिए | बच्चों को लगाना चाहिए कि यह हमारा ही पर्व है |